निकरागुआ में बंदरों की रहस्यमय मौतें

हाउलर (यानी तेज़ आवाज़ में चीखने वाले) बंदर *एलूटा* वंश में आते हैं। हाल ही में खबर आई है कि निकरागुआ के कटिबंधीय जंगलों में 75 ऐसे बंदर मृत पाए गए हैं। और उनकी मौत का कोई कारण नज़र नहीं आ रहा है। इसी प्रकार की मौतें इक्वेडोर और पनामा में भी देखी गई हैं। वैसे तो हाउलर बंदर जोखिमग्रस्त नहीं हैं मगर अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ ने इन्हें 'लगभग खतरे में' की श्रेणी में रखा है।

हाल में हुई मौतों को देखते हुए एन आर्बर स्थित मिशिगन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का एक दल वहां जाकर यह समझने की कोशिश करेगा कि क्या निकरागुआ, पनामा और इक्वेडोर में हुई मौतें आपस में सम्बंधित हैं। वे यह देखने की कोशिश करेंगे कि कहीं ये बंदर भोजन-पानी की कमी की वजह से तो मौत के शिकार नहीं हुए हैं, हालांकि प्रारंभिक जांच में ये बंदर भरपेट पाए गए थे।

यह भी संभावना है कि शायद ये बंदर कीटनाशकों अथवा अन्य संदूषकों के संपर्क में आकर मारे गए हों। या यह भी हो सकता है कि कोई रोगजनक सूक्ष्मजीव इनकी मौत का कारण हो। एक आशंका यह है कि संभवतः इनकी मौत का कारण पीत ज्वर का वायरस हो मगर वैज्ञानिकों का मानना है कि इसकी संभावना कम है क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में निकरागुआ में पीत ज्वर का कोई मामला सामने नहीं आया है।

हालांकि उपरोक्त घटनाओं से ऐसा तो नहीं लगता कि इन बंदरों पर कोई भयानक खतरा मंडरा रहा है मगर वैज्ञानिकों का ख्याल है कि इस तरह से कुछ स्थानीय आबादियां ज़रूर खतरे में पड़ सकती हैं। उससे भी ज़्यादा चिंता की बात यह है कि ये बंदर शुष्क कटिबंधीय जंगलों में - जहां ये रहते हैं - एक बड़े फलभक्षी समुदाय हैं और इनके न रहने या इनकी आबादी कम होने से पेड़ों के बीजों के बिखराव पर असर पड़ सकता है। ये बंदर जितने फल खाते हैं उनके बीजों को काफी दूर-दूर तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण पारिस्थितिक काम भी करते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***